2015

पाठ्यक्रम

एम.ए. (पूर्वार्द्ध) हिन्दी–परीक्षा

प्रथम प्रश्न–पत्र : आधुनिक गद्य–साहित्य MAHI—101

पाठ्य–विषय—व्याख्या एवं विवेचना के लिए निर्धारित—

1. **सकन्दगुप्त** (जयशंकर प्रसाद)
2. **गोदान** (प्रेमचन्द)
3. **निबन्ध–संग्रह** : डॉ. भीमराव अम्बेडकर वि.वि. प्रकाशन सं. 118
4. **चिन्तामणि** (रामचन्द्र शुक्ल)

स्वीकृत निबन्ध—(1) कविता क्या है? (2) साधारणीकरण एवं वैचित्र्यवाद

5. **कथा सप्तक**—सम्पादक डॉ. हरिचरण शर्मा (राजस्थान प्रकाशन, जयपुर)

द्रुतपाठ हेतु—

निम्नलिखित प्रत्येक विधा से सम्बन्धित 1–1 लघुउत्तरीय प्रश्न पूछा जाएगा—

1. **नाटककार**—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र अथवा डॉ. रामकुमार वर्मा।
2. **उपन्यासकार**—जैनेन्द्र अथवा भगवतीचरण वर्मा।
3. **निबन्धकार**—प्रतापनारायण मिश्र अथवा सरदार पूर्णसिंह।
4. **कहानीकार**—फणीश्वरनाथ 'रेणु' अथवा भीष्म साहनी।
5. **स्फुट ग्रन्थ**—अमृतराय (कलम का सिपाही) अथवा हरिवंशराय बच्चन (क्या भूलूँ क्या याद करूँ)

द्वितीय प्रश्न–पत्र : प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य MAHI—102

पाठ्य–विषय—व्याख्या एवं विवेचना के लिए निम्नांकित 8 कवियों में से किन्हीं 5 कवियों का अध्ययन किया जाएगा—

1. **पद्मावती समय (चंदवरदाई)**—सम्पादक : हरिहरनाथ टण्डन
2. **विद्यापति**—डॉ. भीमराव अम्बेडकर वि.वि. प्रकाशन संख्या 119
3. **कबीर ग्रन्थावली**—सम्पादक : श्यामसुन्दर दास (गुरुदेव कौ अंग, विरह कौ अंग, ज्ञानविरह कौ अंग, परचा कौ अंग तथा पद संख्या 1, 8, 16, 69, 75, 92, 175, 311, 396, 398, 401, 402)
4. **जायसी ग्रन्थावली**—सम्पादक : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (नागमती वियोग खण्ड, सिंहलद्वीप वर्णन खण्ड)
5. **भ्रमरगीतसार (सूरदास)**—सम्पादक : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (प्रारम्भ के 50 पद)
6. **विनय पत्रिका (तुलसीदास)** एवं उत्तरकाण्ड (रामचरितमानस) (विनय–पत्रिका के पद संख्या 79 से 130 तक तथा उत्तरकाण्ड के प्रारम्भ के 15 दोहे–चौपइयाँ)
7. **घनानंद–कविता**—सम्पादक : आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (प्रारम्भ के 50 छंद)
8. **बिहारी–रत्नाकर**—सम्पादक : जगन्नाथदास रत्नाकर (प्रारम्भ के 50 दोहे)

तृतीय प्रश्न–पत्र : हिन्दी–साहित्य का इतिहास MAHI—103

पाठ्य–विषय—

1. हिन्दी–साहित्य का इतिहास : काल–विभाजन, सीमा–निर्धारण और नामकरण।
2. हिन्दी–साहित्य : आदिकाल की पृष्ठभूमि, सिद्ध और नाथ–साहित्य, रासो–काव्य, जैन–साहित्य।
3. पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सांस्कृति–चेतना एवं भक्ति–आन्दोलन, विभिन्न काव्यधाराएँ और उनका वैशिष्ट्य।
4. भारत में सूफी मत का विकास तथा प्रमुख सूफी कवि और काव्यग्रंथ, सूफी काव्य में भारतीय संस्कृति एवं लोकजीवन के तत्व।
5. उत्तरमध्यकाल (रीतिकाल) को ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, काल–सीमा और नामकरण, दरबारी संस्कृति और लक्षण–ग्रन्थों की परम्परा, रीतिकालीन साहित्य की विभिन्न धाराओं (रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त) का विकास एवं प्रवृत्तियाँ।
6. आधुनिक काल : विकास एवं प्रवृत्तियाँ।
7. छायावादी एवं उत्तरछायावादी काव्य की विविध प्रवृत्तियाँ–छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता, नवगीत, समकालीन कविता।
8. हिन्दी–गद्य की प्रमुख विधाओं (कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध, संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा, रिपोर्ताज) का स्वरूप एवं विकास।
9. हिन्दी आलोचना का उद्भव और विकास।

चतुर्थ प्रश्न–पत्र : भाषा विज्ञान एवं हिन्दी–भाषा MAHI—104

पाठ्य–विषय

(क) भाषा–विज्ञान :

1. **भाषा और भाषा–विज्ञान**—भाषा की परिभाषा और अभिलक्षण, भाषा–संरचना और भाषिक–प्रकार्य। भाषा–विज्ञान : स्वरूप एवं व्याप्ति, अध्ययन की दिशाएँ–वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक।

2. **स्वनप्रक्रिया**—स्वनविज्ञान का स्वरूप और शाखाएँ, स्वन की अवधारणा और स्वनों का वर्गीकरण, स्वनिम–विज्ञान का स्वरुप, स्वनिम के भेद, स्वनिमिक विश्लेषण।

3. **व्याकरण**—रूपप्रक्रिया का स्वरूप और शाखाएँ, रूपिम की अवधारणा और भेद : मुक्त–आबद्ध, अर्थदर्शी और सम्बन्धदर्शी, वाक्य की अवधारणा, वाक्य के भेद, वाक्य–विश्लेषण।

4. **अर्थविज्ञान**—अर्थ की अवधारणा, शब्द और अर्थ का सम्बन्ध, पर्यायता, अनेकार्थता, विलोमता, अर्थ–परिवर्तन।

5. **साहित्य और भाषा–विज्ञान**—साहित्य के अध्ययन में भाषा–विज्ञान के अंगों की उपयोगिता।

(ख) हिन्दी–भाषा :

1. **हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि**—प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ—वैदिक तथा लौकिक संस्कृत और उनकी विशेषताएँ। मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ—पालि, प्राकृत–शौरसेनी, अर्धमागधी, मागधी, अपभ्रंश और उनकी विशेषताएँ। आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ और उनका वर्गीकरण।

2. **हिन्दी का भौगोलिक विस्तार**—हिन्दी की उपभाषाएँ, पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी तथा पहाड़ी और उनकी बोलियाँ। खड़ीबोली, ब्रज और अवधी की विशेषताएँ।

3. **हिन्दी का भाषिक स्वरुप**—हिन्दी का स्वनिम व्यवस्था—खंड्य, खंडयेतर। हिन्दी शब्द–रचना—उपसर्ग, प्रत्यय, समास। रूपरचना—लिंग, वचन और कारक–व्यवस्था के संदर्भ में हिन्दी के संज्ञा, सर्वनाम, विश्लेषण और क्रियारूप। हिन्दी वाक्य–रचना—पदक्रम और अन्विति।

4. **हिन्दी के विधिक रूप**—सम्पर्क–भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा के रूप में हिन्दी, माध्यम–भाषा, संचार–भाषा, हिन्दी सांविधानिका स्थिति।

5. **हिन्दी में कम्प्यूटर सुविधाएँ**—आंकड़ा–संसाधन और शब्द–संसाधन, वर्तनी–शोधक, मशीनी अनुवाद, हिन्दी भाषा–शिक्षण।

6. **देवनागरी लिपि**—विशेषताएँ और मानकीकरण।

एम.ए. (उत्तरार्द्ध) हिन्दी–परीक्षा

प्रथम प्रश्न–पत्र : आधुनिक हिन्दी काव्य MAHI-201

पाठ्य–विषय—

1. **मैथिलीशरण गुप्त**—साकेत (नवम्–सर्ग)
2. **जयशंकर प्रसाद**—कामायनी (इड़ा, काम, रहस्य सर्ग)
3. **सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'**—राम की शक्ति पूजा, कुकुरमुत्ता
4. **सुमित्रानंदन पंत**—परिवर्तन, नौका–विहार, एक तारा, मौने निमंत्रण, हिमाद्रि, संध्या के बाद।
5. **रामधारी सिंह 'दिनकर'**—उर्वशी (तृतीय–अंक)।

द्वितीय प्रश्न–पत्र : काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन — MAHI-202

पाठ्य–विषय :

(क) भारतीय काव्यशास्त्र—काव्य–लक्षण, काव्य–हेतु, काव्य–प्रयोजन, काव्य के प्रकार।

1. **रस सिद्धान्त**—रस का स्वरूप, रस–निष्पति, रस के अंग, साधारणी–करण, सहृदय की अवधारणा।

2. **अलंकार–सिद्धान्त**—मूल स्थापनाएँ, अलंकारों का वर्गीकरण।

3. **रीति सिद्धान्त**—रीति की अवधारणा, काव्य–गुण, रीति एवं शैली, रीति सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएँ।

4. **वक्रोक्ति–सिद्धान्त**—वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद, वक्रोक्ति एवं अभिव्यंजनावाद।

5. **ध्वनि–सिद्धान्त**—ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि–सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएँ ध्वनि काव्य के प्रमुख भेद, गुणीभूत–व्यंग्य, चित्र–काव्य।

6. **औचित्य–सिद्धान्त**—प्रमुख स्थापनाएँ, औचित्य के भेद।

(ख) पाश्चात्य काव्यशास्त्र :

1. **प्लेटो**—काव्य–सिद्धान्त।
2. **अरस्तू**—अनुकरण–सिद्धान्त, त्रासदी–विवेचना।
3. **लोंजाइनस**—उदात्त की अवधारणा।
4. **मैथ्यू आर्नल्ड**—आलोचना का स्वरूप और प्रकार्य।
5. **टी. एस. इलियट**—परंपरा की परिकल्पना और वैयक्तिक प्रज्ञा, निर्वैयक्तिता का सिद्धान्त, वस्तुनिष्ठ समीकरण, संवेदनशीला का असाहचर्य।
6. **सिद्धान्त और वाद**—आभिजात्यवाद, स्वच्छंदतावाद, अभिव्यंजनावाद, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषण तथा अस्तित्ववाद।

(ग) हिन्दी–आलोचना–शास्त्र :

शास्त्रीय, व्यक्तिवादी, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, प्रभाववादी, मनोविश्लेषणवादी, सौंदर्यशास्त्रीय, शैलीवैज्ञानिक और समाजशास्त्रीय।

तृतीय प्रश्न–पत्र : भारतीय साहित्य 203

पाठ्य–विषय :

प्रथम खण्ड : 1. भारतीय साहित्य का स्वरूप, 2. भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ, 3. भारतीय साहित्य में आज के भारत का बिम्ब, 4. भारतीयता का समाजशास्त्र, 5. हिन्दी–साहित्य में भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति।

द्वितीय खण्ड : बँगला–साहित्य का इतिहास—एक अध्ययन।

तृतीय खण्ड : गुजराती साहित्य तथा हिन्दी–साहित्य के इतिहास का तुलनात्मक अध्ययन।

चतुर्थ खण्ड : निम्नलिखित में से प्रत्येक विधा को पाठ्य–पुस्तक का केवल आलोचनात्मक अध्ययन किय जायेगा।

उपन्यास : अग्निगर्भ (बँगला—महाश्वेता देवी)

कविता–संग्रह : कोचिक्क के दरखत (मलयालयम—के. जी. शंकर पिल्लै)

नाटक : घासीराम कोतवाल (मराठी–विजय तेदुलकर)

चतुर्थ प्रश्न–पत्र : प्रयोजन मूलक हिन्दी — 2.4

पाठ्य–विषय :

खण्ड–क : कामकाजी हिन्दी

1. हिन्दी के विभिन्न रूप—सर्जनात्मक भाषा, संचार भाषा, राजभाषा, माध्यम–भाषा, मातृभाषा।

2. कार्यलयीय हिन्दी (राजभाषा) के प्रमुख प्रकार्य प्रारूपण पत्र लेखन, संक्षेपण, पल्लवन टिप्पण।

3. पारिभाषिक शब्दावली—स्वरुप एवं महत्व, परिभाषिक शब्दावली—निर्माण के सिद्धान्त।

4. ज्ञान–विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली (निर्धारित शब्द)

हिन्दी कम्प्यूटिंग

1. कम्प्यूटर : परिचय, रूपरेखा, उपयोग तथा क्षेत्र, वेब पब्लिशिंक का परिचय।

2. इंटरनेट संपर्क उपकरणों का परिचय, प्रकार्यात्मक रख–रखाव एवं इंटरनेट समय मितव्ययिता के सूत्र।

3. वेब पब्लिशिंग।

4. इंटर एक्सप्लाइट अथवा नेटस्केप।

5. लिंक ब्राउजिंग ई–मेल भेजना/प्राप्त करना, हिन्दी के प्रमुख इंटरनेट पोर्टल।

6. डाउनलोडिंग व अपलोडिंग, हिन्दी सॉफ्टवेयर पैकेज।

खण्ड–ख : पत्रकारिता

1. पत्रकारिता : स्वरूप एवं विविध प्रकार।

2. हिन्दी पत्रकारिता का संक्षिप्त इतिहास।

3. समांचार लेखन कला।

4. संपादन के आधारभूत तत्व।

5. व्यावहारिक प्रूफ शोधन।

6. शीर्षक की संरचना, लीड, इंट्रो एवं शीर्षक–सम्पादन।

7. संपादकीय–लेखन।

8. पृष्ठ–सज्जा।

9. साक्षात्कार, पत्रकार–वार्ता एवं प्रेस प्रबन्धन।

10. प्रमुख प्रेस कानून एवं आचार संहिता।

खण्ड–ग : मीडिया लेखन

1. मीडिया, लेखन, जनसंचार, प्रौद्योगिकी एवं चुनौतियाँ।

2. विभिन्न जनसंचार माध्यमों का स्वरुप–मुद्रण श्रव्य, दृश्य–श्रव्य, इन्टरनेट।

3. सामग्री–सृजन, श्रव्य माध्यर रेडियो नाटक, उद्घोषणा लेखन, विज्ञापन, लेखन, फीचर तथा रिपोर्ताज।

4. दृश्य–श्रव्य माध्यम (फिल्म : टेलीवीजन एवं वीडियो)। दृश्य माध्यामें में भाषा की प्रकृति। दृश्य एवं श्रव्य–सामग्री का सामंजस्य। पार्श्व वाचन (वायस ओवर)। पटकथा लेखन। टेली–ड्रामा, संवाद–लेखन। साहित्य की विधाओं का दृश्य माध्यमों में रूपान्तरण। विज्ञापन की भाषा।

खण्ड–घ : अनुवाद—सिद्धान्त एवं व्यवहार

1. अनुवाद का स्वरूप, क्षेत्र प्रक्रिया एवं प्रविधि।

2. हिन्दी सिद्धान्त एवं व्यवहारं अनुवाद का स्वरुप।

3. क्षेत्र प्रक्रिया एवं प्रविधि।

4. हिन्दी प्रयोजनीयता में अनुवाद की भूमिका।

5. कार्यालयीय हिन्दी एवं अनुवाद।

6. जनसंचार माध्यमों का अनुवाद।

7. विज्ञापन में अनुवाद।

8. वैचारिक–साहित्य का अनुवाद।

9. पत्रों के अनुवाद।

10. वैज्ञानिक, तकनीकि तथा प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में अनुवाद।

11. विधि–साहित्य की हिन्दी और अनुवाद।

12. व्यावहारिक—अनुवाद–अभ्यास।

13. कार्यालयी अनुवाद—कार्यालयी एवं प्रशासनिक शब्दावली, प्रशासनिक प्रयुक्तियाँ, पदनाम, विभाग आदि।

14. पत्रों के अनुवाद।

15. पदनामों, अनुभागों, दस्तावेजों, प्रतिवेदनों के अनुवाद।
16. बैंक–साहित्य के अनुवाद का अभ्यास।
17. साहित्यिक अनुवाद के सिद्धान्त एवं व्यवहार : कविता, कहानी, नाटक।
18. सारानुवाद।
19. दुभाषिया प्रविधि।
20. अनुवाद पुनरीक्षण एवं मूल्यांकन।

पंचम प्रश्न–पत्र : तुलसीदास (कवि) का विशेष अध्ययन — MAHI-205

पाठ्य ग्रंथ :

व्याख्या के लिए रामचरितमानस (बालकाण्ड) विनय–पत्रिका, कवितावली, गीतावली एवं आलोचनात्मक प्रश्न तुलसीदास के सम्पूर्ण साहित्य पर आधारित होंगे।

विशेष संदर्भ ग्रंथ :

तुलसीदास—एक विशेष अध्ययन—संपादक डॉ. त्रिलोकी नाथ श्रीवास्तव

पंचम प्रश्न–पत्र : शोध–प्रविधि एवं लघु शोध–प्रबंध

नोट–यह प्रश्न–पत्र एम.ए. पूर्वार्द्ध परीक्षा में 55% अंक पाने वाले केवल संस्थागत छात्र ले सकेंगे।

शोध–प्रविधि

पाठ्यक्रम :

1. अनुसंधान स्वरूप और विकास
2. अनुसंधान इतिहास
3. शोध–प्रकार (शोध–पद्धतियाँ)–ऐतिहासिक, व्याख्यात्मक, मनोवैज्ञानिक, क्षेत्रीय, तुलनात्मक शोध।
4. अनुसंधान की प्रक्रिया एवं प्रविधि।
5. शोध और समीक्षा, शोध का अधिकारी कौन? शोध के विषय, चयन की प्रक्रिया, विषय की रूपरेखा।
6. सामग्री का संकलन और उसके स्त्रोत।
7. टीप (नोट्स) कैसे ली जाय, शोधार्थी का संकट।
8. सामग्री का वर्गीकरण–विश्लेषण, प्रबन्ध–लेखन।
9. पाठानुसंधान की प्रक्रिया।
10. आधुनिक साहित्य और अनुसंधान।

लघु **शोध–प्रबंध**

नोट–(अ) लघु शोध–प्रबंध की रूपरेखा निर्देशक की स्वीकृति के अनुसार ही तैयार की जायेगी।

(ब) निर्देशक–सम्बन्धित विश्वविद्यालय का हिन्दी–विभागाध्यक्ष अथवा विभाग का कोई वरिष्ठ प्राध्यापक भी हो सकता है।

(स) लघु शोध–प्रबन्ध 15 अप्रैल तक निर्देश के प्रमाणपत्रानुसार विभागाध्यक्ष के माध्यम से कुलसचिव (परीक्षा) के पास भेज दिया जाना चाहिए।

लघु शोध–प्रबन्ध के मूल्यांकन का अंक–विभाजन निम्नवत् होगा–

1. शोध–प्रबंध–लेखन के परीक्षण पर बाह्य परीक्षक एवं निर्देशक द्वारा संयुक्त रूप से ली गयी मौखिक परीक्षा के लिए अधिकतम 20 अंक।
2. शोध–प्रबंध पर एक बाह्य परीक्षक एवं निर्देशक द्वारा संयुक्त रूप से ली गयी मौखिक परीक्षा के लिए अधिकतम 20 अंक।
3. मौखिकी के लिए शोध–प्रबंध का बाह्य परीक्षक को आमन्त्रित किया जायेगा। विषय परिस्थितियों में विभागाध्यक्ष के अनुमोदन पर कुलसचिव किसी अन्य परीक्षक की नियुक्ति मौखिकी के लिए कर सकते हैं।

षष्ठ प्रश्न–पत्र : मौखिकी

नोट–मौखिकी में एम.ए. पूर्वार्द्ध एवं उत्तरार्द्ध परीक्षा के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में से प्रश्न पूछे जायेंगे। इसके अतिरिक्त साहित्यिक पत्रिकाओं, साहित्यकारों और साहित्यिक गतिविधियों में सम्बन्धित प्रश्न भी पूछे जायेंगे।

~~हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास~~

J.S. University,

Shikohabad, Firozabad

Syllabus for

M.A. Hindi

2015
06

2015-16

ACADEMIC YEAR AND ONWARD